*Poona Oriental Series No. 62*

श्रीगौतममुनिप्रणीतः म. म. गंगानाथशर्मसंकलितखद्योत-
टिप्पणीयुतवात्स्यायनभाष्यान्तर्गतः

# न्यायसूत्रपाठः

## वाचस्पतिमिश्रकृत प्रकरणसहितश्च

## GAUTAMA'S

# NYĀYA SŪTRAS

*Text only as embodied in Vātsyāyana Bhāṣya and
Khadyota notes of M. M. Gangānāth Jhā
with topical arrangements of the
sūtras by Vāchaspati Misra.*




POONA
ORIENTAL BOO

# POONA ORIENTAL SERIES

| No. | Title | Rs. |
|---|---|---|
| 1 | **Bhagavadgītā** with Śānkara-Bhāsya, best critical edition | 2-0 |
| 2 | **Bhagvadgītā**—A Fresh Study by Prof. Vadekar, M.A. | 1-0 |
| 3 & 4 | **Kena & Katha Upaniṣads** with Comms. by M. M. Pathak Sastri (1-8, 2) | 3-8 |
| 5 | **Muṇḍakopaniṣat** by M. M. Pathak Sastri | 1-0 |
| 6 | **Iśāvāsyopaniṣat** ,, | 1-0 |
| 7 | **Constructive Survey of Upanisadic Philosophy** by Prof. Ranade R D., M.A. | 10-0 |
| | Glazed edition. | 15-0 |
| 8 | **Minor Works of Sankarācārya** (70 works in all) | 4-0 |
| 9 | **Sāṅkhyakārikā** by Dr. Sharma. Intro. Trans. etc. | 2-0 |
| 10 | **Tattva-Kaumudī** (Sānkhya) by Drs. Jha & Sharma | 3-0 |
| 11 | **Sāṅkhya System**—Critical Study by Prof. Sovani, M.A. | 1-0 |
| 12 | **Ṛgveda, Lectures on** by Dr. Ghate, M.A. | 3-0 |
| 13 | **Brahmasūtra II, 1 & 2** by Dr. Belvalkar, M.A., Ph.D. | 6-0 |
| 14 | **Vedāntasāra** by Hiriyanna | 1-8 |
| 15 | **Tarkasaṅgraha** with Dīpikā by Prof. Gokhale, B.A. | 0-6 |
| 16 | **Tarkabhāṣā** trans. by Dr. Jha | 1-4 |
| 17 | ,, Text by Mr. Kulkarni, B.A., LL.B. | 0-8 |
| | **Arthasaṅgraha** by Gokhale | 2-0 |
| | **Nyāyasāra** by Deodhar and M. M. Abhyankar Shastri | 2-8 |
| | **Saptapadārthī** by Ghate | 1-8 |
| | **ammapada** by Vaidya P.L. | 2-0 |
| | **rit Prakās'a** by Vaidya | 3-0 |
| | **ual of Pali** by Joshi, M.A. | 2-0 |
| | **rative Philology** by ahagirdar, M.A. | 3-0 |
| | **asa** by Dhruva | 4-0 |
| | **ra** by Dravid | 3-0 |

| No. | Title | Rs. |
|---|---|---|
| 27 | **Svapnavāsavdattā** by Prof. Deodhar, M.A., (3rd ed ) | 2-0 |
| 28 | **Pratimā** by Prof. Paranjpe | 3-0 |
| 29 | **Plays ascribed to Bhāsa** by Prof. Deodhar, M.A. | 1-0 |
| 30 | **Uttara-Rāma-carita** Text by Dr. Belvalkar | 1-8 |
| 31 | **Meghadūta** by Dr. Pathak | 1-4 |
| 32 | **Pancatantra** by Dr Edgerton | 1-8 |
| 33 | **Kāvyādars'a** by Dr Belvalkar | 3-0 |
| 34 | **Kāvyālaṅkārasūtravṛtti** Text by Kulkarni, B.A.LL.B. | 1-8 |
| 35 | ,, trans. by Dr. Jha | 1-8 |
| 36 | **Rāṣṭrakūṭas & Their Times** by Dr. Altekar A. S., M.A. | 7-8 |
| 37 | **22 Srutis of Indian Music** | 0-8 |
| 38 | **Manual of Hindu Ethics** by Mr. Chandavarkar, B.A. | 1-4 |
| 39 | **Jha Commemoration Vol.** | 15-0 |
| 40 | **Kṛṣṇa Problem** by Mr. Tadpatrikar, M.A. | 1-0 |
| 41 | **Democratic Hinduism** by the late Mr. Krishna Sastri | 2-0 |
| 42 | **Vaijayantī**—(Under revision) | |
| 43 | **Nāmaliṅgānus'āsana** (In Press) | |
| 44 | **Śās'vata Kos'a** by Kulkarni | 2-0 |
| 45 | **Śabdarūpāvalī & Samāsa** | 0-3 |
| 46 | **Systems of Sk. Gr.** Belvalkar | 3-0 |
| 47 | **Sk. Inscriptions** Selections by Diskalkar 2 Pts. | 4-0 |
| 48 | **Kādambarī** of **Bāṇa**, Text | 3-0 |
| 49 | **Kāvyaprakās'a** X with Comm. Notes Trans. by Sharma | 3-0 |
| 50 | ,, III ,, | 0-8 |
| 51 | **Bhāminīvilāsa** by Sharma | 2-0 |
| 52 | **Jātakasaṅgaha** by Tungar | 0-12 |
| 53 | **Ancient Karnātaka** Vol. I. History of Tuḷuva by Dr. Saletore | 10-0 |
| 54 | **Bhāsanātakacakram** (Text of 13 Plays) by Prof. C. R. Devadhar | 6-0 |
| 55 | **Pāli Saddarupāvali** by Tungar | 0-2 |
| 56 | **Picturesque Orientalia** by Dr. Sardesai, 103 Photos | 10-0 |

| | | |
|---|---|---|
| | 'ā I and II with Comm., Notes, Trans. by Dr Sharma | 1-8 |
| | h Vātsyāna Bhāsya and short Notes | 5-0 |
| | English Translation by Dr G. Jha | 8-0 |
| 61 | प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् | Rs. 1-4-0 |
| 63 | गंगालहरी-सान्वय सार्थ | 0-8-0 |
| | Brāhmaṇical Asceticism (Saṁnyasa) by Sharma | 2-0-0 |

|| श्रीगणेशाय नमः ||

# अथ प्रकरणसहितः न्यायसूत्रपाठः ।

## प्रथमाध्यायस्य प्रथममाह्निकम् ।

अथ द्वाभ्यां २ सूत्राभ्यामभिधेयप्रयोजनसम्बन्धप्रकरणम् ॥ १ ॥

१ प्रमाणप्रमेयसंशयप्रयोजनदृष्टान्तसिद्धान्तावयवतर्कनिर्णयवादजल्पवितण्डाहेत्वाभासच्छलजातिनिग्रहस्थानानां तत्त्वज्ञानान्निःश्रेयसाधिगमः ॥ १ ॥

२ दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरापायादपवर्गः ॥ २ ॥

अथ षड्भिः ६ सूत्रैः प्रमाणलक्षणप्रकरणम् ॥ २ ॥

३ प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः प्रमाणानि ॥ १ ॥

४ इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम् ॥ २ ॥

५ अथ तत्पूर्वकं त्रिविधमनुमानं पूर्ववच्छेषवत्सामान्यतो दृष्टं च ॥३॥

६ प्रसिद्धसाधर्म्यात् साध्यसाधनमुपमानम् ॥ ४ ॥

७ आप्तोपदेशः शब्दः ॥ ५ ॥

८ स द्विविधो दृष्टादृष्टार्थत्वात् ॥ ६ ॥

अथ चतुर्दशभिः १४ सूत्रैः प्रमेयलक्षणप्रकरणम् ॥ ३ ॥

९ आत्मशरीरेन्द्रियार्थबुद्धिमनःप्रवृत्तिदोषप्रेत्यभावफलदुःखापवर्गास्तु प्रमेयम् ॥ १ ॥

१० इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिङ्गम् ॥ २ ॥

११ चेष्टेन्द्रियार्थाश्रयः शरीरम् ॥ ३ ॥

१२ घ्राणरसनचक्षुस्त्वक्श्रोत्राणीन्द्रियाणि भूतेभ्यः ॥ ४ ॥

१३ पृथिव्यापस्तेजो वायुराकाशमिति भूतानि ॥ ५ ॥
१४ गन्धरसरूपस्पर्शशब्दाः पृथिव्यादिगुणास्तदर्थाः ॥ ६ ॥
१५ बुद्धिरुपलब्धिर्ज्ञानमित्यनर्थान्तरम् ॥ ७ ॥
१६ युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिङ्गम् ॥ ८ ॥
१७ प्रवृत्तिर्वाग्बुद्धिशरीरारम्भः इति ॥ ९ ॥
१८ प्रवर्तनालक्षणा दोषाः ॥ १० ॥
१९ पुनरुत्पत्तिः प्रेत्यभावः ॥ ११ ॥
२० प्रवृत्तिदोषजनितोऽर्थः फलम् ॥ १२ ॥
२१ बाधनालक्षणं दुःखम् ॥ १३ ॥
२२ तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः ॥ १४ ॥

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैर्न्यायपूर्वाङ्गलक्षणप्रकरणम् ॥ ४ ॥

२३ समानानेकधर्मोपपत्तेर्विप्रतिपत्तेरुपलब्ध्यनुपलब्ध्यव्यवस्थातश्च विशेषापेक्षो विमर्षः संशयः ॥ १ ॥
२४ यमर्थमधिकृत्य प्रवर्तते तत्प्रयोजनम् ॥ २ ॥
२५ लौकिकपरीक्षकाणां यस्मिन्नर्थे बुद्धिसाम्यं स दृष्टान्तः ॥ ३ ॥

अथ षड्भिः ६ सत्रैर्न्यायाश्रयसिद्धान्तलक्षणप्रकरणम् ॥ ५ ॥

२६ तन्त्राधिकरणाभ्युपगमसंस्थितिः सिद्धान्तः ॥ १ ॥
२७ स चतुर्विधः सर्वतन्त्रप्रतितन्त्राधिकरणाभ्युपगमसंस्थित्यर्थान्तरभावात् ॥ २ ॥
२८ सर्वतन्त्राविरुद्धस्तन्त्रेऽधिकृतोऽर्थः सर्वतन्त्रसिद्धान्तः ॥ ३ ॥
२९ समानतन्त्रसिद्धः परतन्त्रासिद्धः प्रतितन्त्रसिद्धान्तः ॥ ४ ॥
३० यत्सिद्धावन्यप्रकरणसिद्धिः सोऽधिकरणसिद्धान्तः ॥ ५ ॥
३१ अपरीक्षिताभ्युपगमात् तद्विशेषपरीक्षणमभ्युपगमसिद्धान्तः ॥६॥

अथाष्टभिः ८ सूत्रैर्न्यायप्रकरणम् ॥ ६ ॥

३२ प्रतिज्ञाहेतूदाहरणोपनयनिगमनान्यवयवाः ॥ १ ॥

३३ साध्यनिर्देशः प्रतिज्ञा ॥ २ ॥

३४ उदाहरणसाधर्म्यात् साध्यसाधनं हेतुः ॥ ३ ॥

३५ तथा वैधर्म्यात् ॥ ४ ॥

३६ साध्यसाधर्म्यात् तद्धर्मभावी दृष्टान्त उदाहरणम् ॥ ५ ॥

३७ तद्विपर्ययाद्वा विपरीतम् ॥ ६ ॥

३८ उदाहरणापेक्षस्तथेत्युपसंहारो न तथेति वा साध्यस्योपनयः ॥७॥

३९ हेत्वपदेशात् प्रतिज्ञायाः पुनर्वचनं निगमनम् ॥ ८ ॥

अथ द्वाभ्यां २ सूत्राभ्यां न्यायोत्तराङ्गलक्षणप्रकरणम् ॥ ७ ॥

४० अविज्ञाततत्त्वेऽर्थे कारणोपपत्तितस्तत्त्वज्ञानार्थमूहस्तर्कः ॥ १ ॥

४१ विमृश्य पक्षप्रतिपक्षाभ्यामर्थावधारणं निर्णयः ॥ २ ॥

इत्येकचत्वारिंशता ४१ सूत्रैः, सप्तभिः ७ प्रकरणैः

प्रथमाध्यायस्य प्रथमाह्निकं समाप्तम् ॥

## अथ प्रथमाध्यायस्य द्वितीयमाह्निकम् ।

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैः कथालक्षणप्रकरणम् ॥ १ ॥  (८)

४२ प्रमाणतर्कसाधनोपालम्भः सिद्धान्ताविरुद्धः पञ्चावयवोपपन्नः पक्षप्रतिपक्षपरिग्रहो वादः ॥ १ ॥

४३ यथोक्तोपपन्नश्छलजातिनिग्रहस्थानसाधनोपालम्भो जल्पः ॥ २ ॥

४४ स प्रतिपक्षस्थापनाहीनो वितण्डा ॥ ३ ॥

अथ षड्भिः ६ सूत्रैः हेत्वाभासलक्षणप्रकरणम् ॥ २ ॥  (९)

४५ सव्यभिचारविरुद्धप्रकरणसमसाध्यसमकालातीता हेत्वाभासाः॥१॥

४६ अनैकान्तिकः सव्यभिचारः ॥ २ ॥

४७ सिद्धान्तमभ्युपेत्य तद्विरोधी विरुद्धः ॥ ३ ॥

४८ यस्मात् प्रकरणचिन्ता स निर्णयार्थमपदिष्टः प्रकरणसमः ॥ ४ ॥
४९ साध्याविशिष्टः साध्यत्वात् साध्यसमः ॥ ५ ॥
५० कालात्ययापदिष्टः कालातीतः ॥ ६ ॥

अथाष्टभिः ८ सूत्रैश्छललक्षणप्रकरणम् ॥ ३ ॥ (१०)

५१ वचनविघातोऽर्थविकल्पोपपत्त्या छलम् ॥ १ ॥
५२ तत् त्रिविधं वाक्छलं सामान्यच्छलमुपचारच्छलं चेति ॥ २ ॥
५३ अविशेषाभिहितेऽर्थे वक्तुरभिप्रायादर्थान्तरकल्पना वाक्छलम् ॥३॥
५४ सम्भवतोऽर्थस्यातिसामान्ययोगादसम्भूतार्थकल्पना सामान्यच्छलम् ॥ ४ ॥
५५ धर्मविकल्पनिर्देशेऽर्थसद्भावप्रतिषेधे उपचारच्छलम् ॥ ५ ॥
५६ वाक्छलमेवोपचारच्छलं तदविशेषात् ॥ ६ ॥
५७ न, तदर्थान्तरभावात् ॥ ७ ॥
५८ आविशेषे वा किञ्चित्साधर्म्यादेकच्छलप्रसङ्गः ॥ ८ ॥

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैःपुरुषाशक्तिलिङ्गदोषसामान्यलक्षणप्रकरणम् ॥४॥(११)

५९ साधर्म्यवैधर्म्याभ्यां प्रत्यवस्थानं जातिः ॥ १ ॥
६० विप्रतिपत्तिरप्रतिपत्तिश्च निग्रहस्थानम् ॥ २ ॥
६१ तद्विकल्पाज्जातिनिग्रहस्थानबहुत्वम् ॥ ३ ॥

इति विंशत्या २० सूत्रैश्चतुर्भिः ४ प्रकरणैः प्रथमाध्यायस्य
द्वितीयमाह्निकं समाप्तम् ॥
समाप्तश्च प्रथमोऽध्यायः ॥

अत्र प्रकरणानि ११, सूत्राणि ६१ ॥

---

## अथ द्वितीयाध्यायस्य, प्रथममाह्निकम् ।

अथ सप्तभिः ७ सूत्रैः संशयपरीक्षाप्रकरणम् ॥ १ ॥ (१२)

६२ समानानेकधर्माध्यवसायादन्यतरधर्माध्यवसायाद्वा न संशयः ॥१॥
६३ विप्रतिपत्त्यव्यवस्थाध्यवसायाच्च ॥ २ ॥
६४ विप्रतिपत्तौ च सम्प्रतिपत्तेः ॥ ३ ॥
६५ अव्यवस्थात्मनि व्यवस्थितत्वाच्चाव्यवस्थायाः ॥ ४ ॥
६६ तथाऽत्यन्तसंशयस्तद्धर्मसातत्योपपत्तेः ॥ ५ ॥
६७ यथोक्ताध्यवसायादेव तद्विशेषापेक्षात् संशये नासंशयो नात्यन्त संशयो वा ॥ ६ ॥
६८ यत्र संशयस्तत्रैवमुत्तरोत्तरप्रसङ्गः ॥ ७ ॥

अथ त्रयोदशभिः १३ सूत्रैः प्रमाणसामान्यपरीक्षाप्रकरणम् ॥ २ ॥ (१३)

६९ प्रत्यक्षादीनामप्रामाण्यं त्रैकाल्यासिद्धेः ॥ १ ॥
७० पूर्वं हि प्रमाणसिद्धौ नेन्द्रियार्थसन्निकर्षात् प्रत्यक्षोत्पत्तिः ॥ २ ॥
७१ पश्चात् सिद्धौ न प्रमाणेभ्यः प्रमेयसिद्धिः ॥ ३ ॥
७२ युगपत्सिद्धौ प्रत्यर्थनियतत्वात् क्रमवृत्तित्वाभावो बुद्धीनाम् ॥ ४ ॥
७३ त्रैकाल्यासिद्धेः प्रतिषेधानुपपत्तिः ॥ ५ ॥
७४ सर्वप्रमाणप्रतिषेधाच्च प्रतिषेधानुपपत्तिः ॥ ६ ॥
७५ तत्प्रामाण्ये वा न सर्वप्रमाणविप्रतिषेधः ॥ ७ ॥
७६ त्रैकाल्याप्रतिषेधश्च शब्दादातोद्यसिद्धिवत् तत्सिद्धेः ॥ ८ ॥
७७ प्रमेया च तुला प्रामाण्यवत् ॥ ९ ॥
७८ प्रमाणतः सिद्धेः प्रमाणानां प्रमाणान्तरसिद्धिप्रसङ्गः ॥ १० ॥
७९ तद्विनिवृत्तेर्वा प्रमाणसिद्धिवत् प्रमेयसिद्धिः ॥ ११ ॥
८० न, प्रदीपप्रकाशसिद्धिवत् तत्सिद्धेः ॥ १२ ॥
८१ क्वचिन्निवृत्तिदर्शनादनिवृत्तिदर्शनाच्च क्वचिदनैकान्तः ॥ १३ ॥

अथ दशभिः १० सूत्रैः प्रत्यक्षलक्षणपरीक्षाप्रकरणम् ॥ ३ ॥ (१४)

८२ प्रत्यक्षलक्षणानुपपत्तिरसमग्रवचनात् ॥ १ ॥
८३ नात्ममनसोः सन्निकर्षाभावे प्रत्यक्षोत्पत्तिः ॥ २ ॥
८४ दिग्देशकालाकाशेष्वप्येवं प्रसङ्गः ॥ ३ ॥
८५ ज्ञानलिङ्गत्वादात्मनो नानवरोधः ॥ ४ ॥
८६ तदयौगपद्यलिङ्गत्वाच्च न मनसः ॥ ५ ॥
८७ प्रत्यक्षनिमित्तत्वाच्चेन्द्रियार्थयोः सन्निकर्षस्य स्वशब्देन वचनम् ॥
८८ सुप्तव्यासक्तमनसां चेन्द्रियार्थयोः सन्निकर्षनिमित्तत्वात् ॥ ७ ॥
८९ तैश्चापदेशो ज्ञानविशेषाणाम् ॥ ८ ॥
९० व्याहतत्वादहेतुः ॥ ९ ॥
९१ न, अर्थविशेषप्राबल्यात् ॥ १० ॥

अथ सप्तभिः ७ सूत्रैः प्रत्यक्षानुमानत्वपरीक्षाप्रकरणम् ॥ ४ ॥ (१५)

९२ प्रत्यक्षमनुमानमेकदेशग्रहणादुपलब्धेः ॥ १ ॥
९३ न, प्रत्यक्षेण यावत्तावदप्युपलम्भात् ॥ २ ॥
९४ न चैकदेशोपलब्धिरवयविसद्भावात् ॥ ३ ॥
९५ साध्यत्वादवयविनि सन्देहः ॥ ४ ॥
९६ सर्वाग्रहणमवयव्यसिद्धेः ॥ ५ ॥
९७ धारणाकर्षणोपपत्तेश्च ॥ ६ ॥
९८ सेनावनवद्ग्रहणमिति चेन्न, अतीन्द्रियत्वादणूनाम् ॥ ७ ॥

अथ द्वाभ्यां २ सूत्राभ्यामनुमानपरीक्षाप्रकरणम् ॥ ५ ॥ (१६)

९९ रोधोपघातसादृश्येभ्यो व्यभिचारादनुमानमप्रमाणम् ॥ १ ॥
१०० न, एकदेशत्राससादृश्येभ्योऽर्थान्तरभावात् ॥ २ ॥

अथ पञ्चभिः ५ सूत्रैर्वर्तमानपरीक्षाप्रकरणम् औपोद्घातिकम् ॥६॥ (१७)

१०१ वर्तमानाभावः, पततः पतितपतितव्यकालोपपत्तेः ॥ १ ॥

१०२ तयोरप्यभावो वर्तमानाभावे, तदपेक्षत्वात् ॥ २ ॥

१०३ नातीतानागतयोरितरेतरापेक्षा सिद्धिः ॥ ३ ॥

१०४ वर्तमानाभावे सर्वाग्रहणं प्रत्यक्षानुपपत्तेः ॥ ४ ॥

१०५ कृतताकर्तव्यतोपपत्तेस्तूभयथा ग्रहणम् ॥ ५ ॥

अथ पञ्चभिः ५ सूत्रैरुपमानपरीक्षाप्रकरणम् ॥ ७ ॥ (१८)

१०६ अत्यन्तप्रायैकदेशसाधर्म्यादुपमानासिद्धिः ॥ १ ॥

१०७ प्रसिद्धसाधर्म्यादुपमानसिद्धेर्यथोक्तदोषानुपपत्तिः ॥ २ ॥

१०८ प्रत्यक्षेणाप्रत्यक्षसिद्धेः ॥ ३ ॥

१०९ नाप्रत्यक्षे गवये प्रमाणार्थमुपमानस्य पश्याम इति ॥ ४ ॥

११० तथेत्युपसंहारादुपमानसिद्धेर्नाविशेषः ॥ ५ ॥

अथ अष्टभिः ८ सूत्रैः शब्दसामान्यपरीक्षाप्रकरणम् ॥ ८ ॥ (१९)

१११ शब्दोऽनुमानमर्थस्यानुपलब्धेरनुमेयत्वात् ॥ १ ॥

११२ उपलब्धेरद्विप्रवृत्तित्वात् ॥ २ ॥

११३ सम्बन्धाच्च ॥ ३ ॥

११४ आप्तोपदेशसामर्थ्याच्छब्दादर्थसम्प्रत्ययः ॥ ४ ॥

११५ पूरणप्रदाहपाटनानुपपत्तेश्च सम्बन्धाभावः ॥ ५ ॥

११६ शब्दार्थव्यवस्थानादप्रतिषेधः ॥ ६ ॥

११७ न, सामयिकत्वाच्छब्दार्थसम्प्रत्ययस्य ॥ ७ ॥

११८ जातिविशेषे चानियमात् ॥ ८ ॥

अथ द्वादशभिः १२ सूत्रैः शब्दविशेषपरीक्षाप्रकरणम् ॥ ९ ॥ (२०)

११९ तदप्रामाण्यमनृतव्याघातपुनरुक्तदोषेभ्यः ॥ १ ॥

१२० न कर्मकर्तृसाधनवैगुण्यात् ॥ २ ॥

१२१ अभ्युपेत्य कालभेदे दोषवचनात् ॥ ३ ॥

१२२ अनुवादोपपत्तेश्च ॥ ४ ॥

१२३ वाक्यविभागस्य चार्थग्रहणात् ॥ ५ ॥

१२४ विध्यर्थवादानुवादवचनविनियोगात् ॥ ६ ॥

१२५ विधिर्विधायकः ॥ ७ ॥

१२६ स्तुतिर्निन्दा परकृतिः पुराकल्प इत्यर्थवादः ॥ ८ ॥

१२७ विधिविहितस्यानुवचनमनुवादः ॥ ९ ॥

१२८ नानुवादपुनरुक्तयोर्विशेषः शब्दाभ्यासोपपत्तेः ॥ १० ॥

१२९ शीघ्रतरगमनोपदेशवदभ्यासान्नाविशेषः ॥ ११ ॥

१३० मन्त्रायुर्वेदप्रामाण्यवच्च तत्प्रामाण्यमाप्तप्रामाण्यात् ॥ १२ ॥

इति नवोत्तरषष्ट्या ६९ सूत्रैर्नवभिः ९ प्रकरणैः द्वितीयाध्यायस्याद्यमाह्निकं समाप्तम् ॥

---

## अथ द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयमाह्निकम् ।

अथ द्वादशभिः १२ सूत्रैः प्रमाणचतुष्ट्वपरीक्षाप्रकरणम् ॥ १ ॥ ( २१ )

१३१ न चतुष्ट्वमैतिह्यार्थापत्तिसम्भवाभावप्रामाण्यात् ॥ १ ॥

१३२ शब्द ऐतिह्यानर्थान्तरभावादनुमानेऽर्थापत्तिसम्भवाभावानर्थान्तरभावाच्चाप्रतिषेधः ॥ २ ॥

१३३ अर्थापत्तिरप्रमाणमनैकान्तिकत्वात् ॥ ३ ॥

१३४ अनर्थापत्तावर्थापत्त्यभिमानात् ॥ ४ ॥

१३५ प्रतिषेधाप्रामाण्यं चानैकान्तिकत्वात् ॥ ५ ॥

१३६ तत्प्रामाण्ये वा नार्थापत्त्यप्रामाण्यम् ॥ ६ ॥

१३७ नाभावप्रामाण्यं प्रमेयासिद्धेः ॥ ७ ॥

१३८ लक्षितेष्वलक्षणलक्षितत्वादलक्षितानां तत्प्रमेयसिद्धिः ॥ ८ ॥

१३९ असत्यर्थे नाभाव इति चेन्न, अन्यलक्षणोपपत्तेः ॥ ९ ॥
१४० तत्सिद्धेरलक्षितेष्वहेतुः ॥ १० ॥
१४१ न लक्षणावस्थितापेक्षसिद्धेः ॥ ११ ॥
१४२ प्रागुत्पत्तेरभावोपपत्तेश्च ॥ १२ ॥

अथ सप्तविंशत्याः २७ सूत्रैः शब्दानित्यताप्रकरणम् ॥ २ ॥ (२२)

१४३ आदिमत्त्वादैन्द्रियकत्वात् कृतकवदुपचाराच्च ॥ १ ॥
१४४ न घटाभावसामान्यनित्यत्वान्नित्येष्वप्यनित्यवदुपचाराच्च ॥ २ ॥
१४५ तत्त्वभाक्तयोर्नानात्वविभागादव्यभिचारः ॥ ३ ॥
१४६ सन्तानानुमानविशेषणात् ॥ ४ ॥
१४७ कारणद्रव्यस्य प्रदेशशब्देनाभिधानात् ॥ ५ ॥
१४८ प्रागुच्चारणादनुपलब्धेरावरणाद्यनुपलब्धेश्च ॥ ६ ॥
१४९ तदनुपलब्धेरनुपलम्भादावरणोपपत्तिः ॥ ७ ॥
१५० अनुपलम्भादप्यनुपलब्धिसद्भावान्नावरणानुपपत्तिरनुपलम्भात् ८
१५१ अनुपलम्भात्मकत्वादनुपलब्धेरहेतुः ॥ ९ ॥
१५२ अस्पर्शत्वात् ॥ १० ॥
१५३ न, कर्मानित्यत्वात् ॥ ११ ॥
१५४ नाणुनित्यत्वात् ॥ १२ ॥
१५५ सम्प्रदानात् ॥ १३ ॥
१५६ तदन्तरालानुपलब्धेरहेतुः ॥ १४ ॥
१५७ अध्यापनादप्रतिषेधः ॥ १५ ॥
१५८ उभयोः पक्षयोरन्यतरस्याध्यापनादप्रतिषेधः ॥ १६ ॥
१५९ अभ्यासात् ॥ १७ ॥
१६० नान्यत्वेऽप्यभ्यासस्योपचारात् ॥ १८ ॥
१६१ अन्यदन्यस्मादनन्यत्वादनन्यदित्यन्यताऽभावः ॥ १९ ॥
१६२ तदभावे नास्त्यनन्यता तयोरितरेतरापेक्षासिद्धेः ॥ २० ॥

१६३ विनाशकारणानुपलब्धेश्च ॥ २१ ॥
१६४ अश्रवणकारणानुपलब्धेः सततश्रवणप्रसङ्गः ॥ २२ ॥
१६५ उपलभ्यमाने चानुपलब्धेरसत्त्वादनपदेशः ॥ २३ ॥
१६६ पाणिनिमित्तप्रश्लेषाच्छब्दाभावे नानुपलब्धिः ॥ २४ ॥
१६७ विनाशकारणानुपलब्धेश्चावस्थाने तन्नित्यत्वप्रसङ्गः ॥ २५ ॥
१६८ अस्पर्शत्वादप्रतिषेधः ॥ २६ ॥
१६९ विभक्त्यन्तरोपपत्तेश्च समासे ॥ २७ ॥

अथ अष्टादशभिः १८ सूत्रैः शब्दपरिणामप्रकरणम् ॥ ३ ॥ (२३)

१७० विकारादेशोपदेशात् संशयः ॥ १ ॥
१७१ प्रकृतिविवृद्धौ विकारविवृद्धेः ॥ २ ॥
१७२ न्यूनसमाधिकोपलब्धेर्विकाराणामहेतुः ॥ ३ ॥
१७३ द्विविधस्यापि हेतोरभावादसाधनं दृष्टान्तः ॥ ४ ॥
१७४ न, अतुल्यप्रकृतानां विकारविकल्पात् ॥ ५ ॥
१७५ द्रव्यविकारवैषम्यवद्वर्णविकारविकल्पः ॥ ६ ॥
१७६ न, विकारधर्मानुपपत्तेः ॥ ७ ॥
१७७ विकारप्राप्तानामपुनरापत्तेः ॥ ८ ॥
१७८ सुवर्णादीनां पुनरापत्तेरहेतुः ॥ ९ ॥
१७९ न, तद्विकाराणां सुवर्णभावाव्यतिरेकात् ॥ १० ॥
१८० नित्यत्वेऽविकारादनित्यत्वे चानवस्थानात् ॥ ११ ॥
१८१ नित्यानामतीन्द्रियत्वात् तद्धर्मविकल्पाच्च वर्णविकाराणामप्रतिषेधः ॥ १२ ॥
१८२ अनवस्थायित्वे च वर्णोपलब्धिवत् तद्विकारोपपत्तिः ॥ १३ ॥
१८३ विकारधर्मित्वे नित्यत्वाभावात् कालान्तरे विकारोपपत्तेश्चाप्रतिषेधः ॥ १४ ॥
१८४ प्रकृत्यनियमात् ॥ १५ ॥

१८५ अनियमे नियमान्नानियमः ॥ १६ ॥

१८६ नियमानियमविरोधादनियमे नियमाच्चाप्रतिषेधः ॥ १७ ॥

१८७ गुणान्तरापत्त्युपमर्दह्रासवृद्धिलेशश्लेषेभ्यस्तु विकारोपपत्तेर्वर्णविकाराः ॥ १८ ॥

अथ द्वादशभिः १२ सूत्रैः शब्दशक्तिपरीक्षा [पदार्थनिरूपण] प्रकरणम् ॥४॥ (२४)

१८८ ते विभक्त्यन्ताः पदम् ॥ १ ॥

१८९ व्यक्त्याकृतिजातिसन्निधावुपचारात् संशयः ॥ २ ॥

१९० या शब्दसमूहत्यागपरिग्रहसङ्ख्यावृद्ध्युपचयवर्णसमासानुबन्धानां व्यक्तावुपचाराद्व्यक्तिः ॥ ३ ॥

१९१ न, तदनवस्थानात् ॥ ४ ॥

१९२ सहचरणस्थानतादर्थ्यवृत्तमानधारणसामीप्ययोगसाधनाधिपत्येभ्यो ब्राह्मणमञ्चकटराजसक्तुचन्दनगङ्गाशाटकान्नपुरुषेष्वतद्भावेऽपि तदुपचारः ॥ ५ ॥

१९३ आकृतिस्तदपेक्षत्वात् सत्त्वव्यवस्थानसिद्धेः ॥ ६ ॥

१९४ व्यक्त्याकृतियुक्तेऽप्यप्रसङ्गात् प्रोक्षणादीनां मृद्गवके, जातिः ॥७॥

१९५ नाकृतिव्यक्त्यपेक्षत्वाज्जात्यभिव्यक्तेः ॥ ८ ॥

१९६ व्यक्त्याकृतिजातयस्तु पदार्थः ॥ ९ ॥

१९७ व्यक्तिर्गुणविशेषाश्रयो मूर्तिः ॥ १० ॥

१९८ आकृतिर्जातिलिङ्गाख्या ॥ ११ ॥

१९९ समानप्रसवात्मिका जातिः ॥ १२ ॥

इति नवोत्तरषष्ट्या ६९ सूत्रैश्चतुर्भिः ४ प्रकरणैर्द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयमाह्निकम् ॥

समाप्तश्च द्वितीयोऽध्यायः ॥

अत्र प्रकरणानि १३, सूत्राणि १३८ ॥

---

## अथ तृतीयाध्यायस्य प्रथममाह्निकम् ।

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैरिन्द्रियव्यतिरिक्तात्मप्रकरणम् ॥ १ ॥ (२५)

२०० दर्शनस्पर्शनाभ्यामेकार्थग्रहणात् ॥ १ ॥
२०१ न विषयव्यवस्थानात् ॥ २ ॥
२०२ तद्व्यवस्थानादेवात्मसद्भावादप्रतिषेधः ॥ ३ ॥

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैः शरीरव्यतिरिक्तात्मप्रकरणम् ॥ २ ॥ (२६)

२०३ शरीरदाहे पातकाभावात् ॥ १ ॥
२०४ तदभावः सात्मकप्रदाहेऽपि तन्नित्यत्वात् ॥ २ ॥
२०५ न कार्याश्रयकर्तृवधात् ॥ ३ ॥

अथाष्टभिः ८ सूत्रैः प्रासङ्गिकं चक्षुरद्वैतनिराकरणप्रकरणम् ॥ ३ ॥ (२७)

२०६ सव्यदृष्टस्येतरेण प्रत्यभिज्ञानात् ॥ १ ॥
२०७ नैकस्मिन्नासास्थिव्यवहिते द्वित्वाभिमानात् ॥ २ ॥
२०८ एकविनाशे द्वितीयाविनाशान्नैकत्वम् ॥ ३ ॥
२०९ अवयवनाशेऽप्यवयव्युपलब्धेरहेतुः ॥ ४ ॥
२१० दृष्टान्तावरोधादप्रतिषेधः ॥ ५ ॥
२११ इन्द्रियान्तरविकारात् ॥ ६ ॥
२१२ न स्मृतेः स्मर्तव्यविषयत्वात् ॥ ७ ॥
२१३ तदात्मगुणसद्भावादप्रतिषेधः ॥ ८ ॥

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैरात्मनो मनोव्यतिरेकप्रकरणम् ॥ ४ ॥ (२८)

२१४ नात्मप्रतिपत्तिहेतूनां मनसि सम्भवात् ॥ १ ॥
२१५ ज्ञातुर्ज्ञानसाधनोपपत्तेः सञ्ज्ञाभेदमात्रम् ॥ २ ॥
२१६ नियमश्च निरनुमानः ॥ ३ ॥

अथ नवभिः ९ सूत्रैरात्मनित्यताप्रकरणम् ॥ ५ ॥ (२९)

२१७ पूर्वाभ्यस्तस्मृत्यनुबन्धाज्जातस्य हर्षभयशोकसम्प्रतिपत्तेः ॥ १ ॥
२१८ पद्मादिषु प्रबोधसम्मीलनविकारवत् तद्विकारः ॥ २ ॥
२१९ न, उष्णशीतवर्षाकालनिमित्तवात् पञ्चात्मकविकाराणाम् ॥ ३ ॥
२२० प्रेत्याहाराभ्यासकृतात् स्तन्याभिलाषात् ॥ ४ ॥
२२१ अयसोऽयस्कान्ताभिगमनवत् तदुपसर्पणम् ॥ ५ ॥
२२२ न, अन्यत्र प्रवृत्त्यभावात् ॥ ६ ॥
२२३ वीतरागजन्मादर्शनात् ॥ ७ ॥
२२४ सगुणद्रव्योत्पत्तिवत् तदुत्पत्तिः ॥ ८ ॥
२२५ न, सङ्कल्पनिमित्तत्वाद्रागादीनाम् ॥ ९ ॥

अथ पञ्चभिः ५ सूत्रैः शरीरपरीक्षाप्रकरणम् ॥ ६ ॥ (३०)

२२६ पार्थिवं गुणान्तरोपलब्धेः ॥ १ ॥
२२७ पार्थिवाप्यतैजसं तद्गुणोपलब्धेः ॥ २ ॥
२२८ निःश्वासोच्छ्वासोपलब्धेश्चातुर्भौतिकम् ॥ ३ ॥
२२९ गन्धक्लेदपाकव्यूहावकाशदानेभ्यः पाञ्चभौतिकम् ॥ ४ ॥
२३० श्रुतिप्रामाण्याच्च ॥ ५ ॥

अथ विंशत्या २० सूत्रैरिन्द्रियभौतिकत्वपरीक्षाप्रकरणम् ॥ ७ ॥ (३१)

२३१ कृष्णसारे सत्युपलम्भाद्व्यतिरिच्य चोपलम्भात् संशयः ॥ १ ॥
२३२ महदणुग्रहणात् ॥ २ ॥
२३३ रश्म्यर्थसन्निकर्षविशेषात् तद्ग्रहणम् ॥ ३ ॥
२३४ तदनुपलब्धेरहेतुः ॥ ४ ॥
२३५ नानुमीयमानस्य प्रत्यक्षतोऽनुपलब्धिरभावहेतुः ॥ ५ ॥
२३६ द्रव्यगुणधर्मभेदाच्च उपलब्धिनियमः ॥ ६ ॥
२३७ अनेकद्रव्यसमवायाद्रूपविशेषाच्च रूपोपलब्धिः ॥ ७ ॥

२३८ कर्मकारितश्चेन्द्रियाणां व्यूहः पुरुषार्थतन्त्रः ॥ ८ ॥
२३९ मध्यन्दिनोल्काप्रकाशानुपलब्धिवत्तदनुपलब्धिः ॥ ९ ॥
२४० न, रात्रावप्यनुपलब्धेः ॥ १० ॥
२४१ बाह्यप्रकाशानुग्रहाद् विषयोपलब्धेरनभिव्यक्तितोऽनुपलब्धिः ॥
॥ ११ ॥
२४२ अभिव्यक्तौ चाभिभवात् ॥ १२ ॥
२४३ नक्तञ्चरनयनरश्मिदर्शनाच्च ॥ १३ ॥
२४४ अप्राप्यग्रहणं काचाभ्रपटलस्फटिकान्तरितोपलब्धेः ॥ १४ ॥
२४५ कुड्यान्तरितानुपलब्धेरप्रतिषेधः ॥ १५ ॥
२४६ अप्रतिघातात् सन्निकर्षोपपत्तिः ॥ १६ ॥
२४७ आदित्यरश्मेः स्फटिकान्तरितेऽपि दाह्येऽविघातात् ॥ १७ ॥
२४८ नेतरेतरधर्मप्रसङ्गात् ॥ १८ ॥
२४९ आदर्शोदकयोः प्रसादस्वाभाव्यापापे लब्धिवत् तदुपलब्धिः ॥
॥ १९ ॥
२५० दृष्टानुमितानां हि नियोगप्रतिषेधानुपपत्तिः ॥ २० ॥

अथ दशभिः १० सूत्रैरिन्द्रियनानात्वप्रकरणम् ॥ ८ ॥ (३२)

२५१ स्थानान्यत्वे नानात्वादवयविनानास्थानत्वाच्च संशयः ॥ १ ॥
२५२ त्वगव्यतिरेकात् ॥ २ ॥
२५३ न युगपदर्थानुपलब्धेः ॥ ३ ॥
२५४ विप्रतिषेधाच्च न त्वगेका ॥ ४ ॥
२५५ इन्द्रियार्थपञ्चत्वात् ॥ ५ ॥
२५६ न, तदर्थबहुत्वात् ॥ ६ ॥
२५७ गन्धत्वाद्यव्यतिरेकाद्गन्धादीनामप्रतिषेधः ॥ ७ ॥
२५८ विषयत्वाव्यतिरेकादेकत्वम् ॥ ८ ॥

२५९ न, बुद्धिलक्षणाधिष्ठानगत्याकृतिजातिपञ्चत्वेभ्यः ॥ ९ ॥
२६० भूतगुणविशेषोपलब्धेस्तादात्म्यम् ॥ १० ॥

अथ द्वादशभिः १२ सूत्रैरर्थपरीक्षाप्रकरणम् ॥ ९ ॥ (३३)

२६१ गन्धरसरूपस्पर्शशब्दानां स्पर्शपर्यन्ताः पृथिव्याः ॥ १ ॥
२६२ अप्तेजोवायूनां पूर्वं पूर्वमपोह्याकाशस्योत्तरः ॥ २ ॥
२६३ न, सर्वगुणानुपलब्धेः ॥ ३ ॥
२६४ एकैकश्येनोत्तरोत्तरगुणसद्भावादुत्तरोत्तराणां तदनुपलब्धिः ॥४॥
२६५ विष्टं ह्यपरंपरेण ॥ ५ ॥
२६६ न, पार्थिवाप्ययोः प्रत्यक्षत्वात् ॥ ६ ॥
२६७ पूर्वपूर्वगुणोत्कर्षात् तत्तत्प्रधानम् ॥ ७ ॥
२६८ तद्व्यवस्थानं तु भूयस्त्वात् ॥ ८ ॥
२६९ सगुणानामिन्द्रियभावात् ॥ ९ ॥
२७० तेनैव तस्याग्रहणाच्च ॥ १० ॥
२७१ न, शब्दगुणोपलब्धेः ॥ ११ ॥
२७२ तदुपलब्धिरितरेतरद्रव्यगुणवैधर्म्यात् ॥ १२ ॥

इति त्रिसप्तत्या ७३ सूत्रैर्नवभिः ९ प्रकरणैस्तृतीयाध्यायस्याद्यमाह्निकं । समाप्तम् ॥

---

## अथ तृतीयाध्यायस्य द्वितीयमाह्निकम् ।

अथ नवभिः ९ सूत्रैर्बुद्ध्यनित्यताप्रकरणम् ॥ १ ॥ (३४)

२७३ कर्माकाशसाधर्म्यात् संशयः ॥ १ ॥
२७४ विषयप्रत्यभिज्ञानात् ॥ २ ॥
२७५ साध्यसमत्वादहेतुः ॥ ३ ॥
२७६ न, युगपदग्रहणात् ॥ ४ ॥
२७७ अप्रत्यभिज्ञाने च विनाशप्रसङ्गः ॥ ५ ॥

२७८ क्रमवृत्तित्वादयुगपद्ग्रहणम् ॥ ६ ॥
२७९ अप्रत्यभिज्ञानं च विषयान्तरव्यासङ्गात् ॥ ७ ॥
२८० न, गत्यभावात् ॥ ८ ॥
२८१ स्फटिकान्यत्वाभिमानवत् तदन्यत्वाभिमानः ॥ ९ ॥

अथाष्टभिः ८ सूत्रैरौपोद्घातिकं क्षणभङ्गप्रकरणम् ॥ २ ॥ (३५)

२८२ स्फटिकेऽप्यपरापरोत्पत्तेः क्षणिकत्वाद्व्यक्तीनामहेतुः ॥ १ ॥
२८३ नियमहेत्वभावाद्यथादर्शनमभ्यनुज्ञा ॥ २ ॥
२८४ नोत्पत्तिविनाशकारणोपलब्धेः ॥ ३ ॥
२८५ क्षीरविनाशे कारणानुपलब्धिवद्दध्युत्पत्तिवच्च तदुत्पत्तिः ॥ ४ ॥
२८६ लिङ्गतो ग्रहणान्नानुपलब्धिः ॥ ५ ॥
२८७ न पयसः परिणामगुणान्तरप्रादुर्भावात् ॥ ६ ॥
२८८ व्यूहान्तराद्द्रव्यान्तरोत्पत्तिदर्शनं पूर्वद्रव्यनिवृत्तेरनुमानम् ॥७॥
२८९ क्वचिद्विनाशकारणानुपलब्धेः क्वचिच्चोपलब्धेरनेकान्तः ॥ ८ ॥

अथ चतुर्विंशत्या २४ सूत्रैर्बुद्धेरात्मगुणत्वप्रकरणम् ॥ ३ ॥ (३६)

२९० नेन्द्रियार्थयोस्तद्विनाशेऽपि ज्ञानावस्थानात् ॥ १ ॥
२९१ युगपज्ज्ञेयानुपलब्धेश्च न मनसः ॥ २ ॥
२९२ तदात्मगुणत्वेऽपि तुल्यम् ॥ ३ ॥
२९३ इन्द्रियैर्मनसः सन्निकर्षाभावात् तदनुत्पत्तिः ॥ ४ ॥
२९४ नोत्पत्तिकारणानपदेशात् ॥ ५ ॥
२९५ विनाशकारणानुपलब्धेश्चावस्थाने तन्नित्यत्वप्रसङ्गः ॥ ६ ॥
२९६ अनित्यत्वग्रहणात् बुद्धेर्बुद्ध्यन्तराद्विनाशः शब्दवत् ॥ ७ ॥
२९७ ज्ञानसमवेतात्मप्रदेशसन्निकर्षान्मनसः स्मृत्युत्पत्तेर्न युगपदुत्पत्ति
२९८ नान्तःशरीरवृत्तित्वान्मनसः ॥ ९ ॥
२९९ साध्यत्वादहेतुः ॥ १० ॥

३०० स्मरतः शरीरधारणोपपत्तेरप्रतिषेधः ॥ ११ ॥

३०१ न तदाशुगतित्वान्मनसः ॥ १२ ॥

३०२ न स्मरणकालानियमात् ॥ १३ ॥

३०३ आत्मप्रेरणयदृच्छाज्ञताभिश्च न संयोगविशेषः ॥ १४ ॥

३०४ व्यासक्तमनसः पादव्यथनेन संयोगविशेषेण समानम् ॥ १५ ॥

३०५ प्रणिधानलिङ्गादिज्ञानानामयुगपद्भावादयुगपत्स्मरणम् ॥ १६ ॥

३०६ ज्ञस्येच्छाद्वेषनिमित्तत्वादारम्भनिवृत्त्योः ॥ १७ ॥

३०७ तल्लिङ्गत्वादिच्छाद्वेषयोः पार्थिवाद्येष्वप्रतिषेधः ॥ १८ ॥

३०८ परश्वादिष्वारम्भनिवृत्तिदर्शनात् ॥ १९ ॥

३०९ नियमानियमौ तु तद्विशेषकौ ॥ २० ॥

३१० यथोक्तहेतुत्वात् पारतन्त्र्यादकृताभ्यागमाच्च न मनसः ॥ २१ ॥

३११ परिशेषाद्यथोक्तहेतूपपत्तेश्च ॥ २२ ॥

३१२ स्मरणं त्वात्मनो ज्ञस्वाभाव्यात् ॥ २३ ॥

३१३ प्रणिधाननिबन्धाभ्यासलिङ्गलक्षणसादृश्यपरिग्रहाश्रयाश्रितसम्बन्धानन्तर्यवियोगैककार्यविरोधातिशयप्राप्तिव्यवधान सुखदुःखेच्छाद्वेषभयार्थित्वक्रियारागधर्माधर्मनिमित्तेभ्यः ॥ २४ ।

अथ चतुर्भिः ४ सूत्रैर्बुद्धेरुत्पन्नापवर्गित्वप्रकरणम् ॥ ४ ॥ (३७)

३१४ कर्मानवस्थायिग्रहणात् ॥ १ ॥

३१५ अव्यक्तग्रहणमनवस्थायित्वाद्विद्युत्सम्पाते रूपाव्यक्तग्रहणवत्

३१६ हेतूपादानात् प्रतिषेद्धव्याभ्यनुज्ञा ॥ ३ ॥

३१७ न प्रदीपार्चिःसन्तत्याभिव्यक्तग्रहणवत् तद्ग्रहणम् ॥ ४ ॥

अथ दशभिः १० सूत्रैर्बुद्धेः शरीरगुणव्यतिरेकप्रकरणम् ॥ ५ ॥ (३८)

३१८ द्रव्ये स्वगुणपरगुणोपलब्धेः संशयः ॥ १ ॥

३१९ यावच्छरीरभावित्वाद्रूपादीनाम् ॥ २ ॥

३२० न, पाकजगुणान्तरोत्पत्तेः ॥ ३ ॥
३२१ प्रतिद्वन्द्विसिद्धेः पाकजानामप्रतिषेधः ॥ ४ ॥
३२२ शरीरव्यापित्वात् ॥ ५ ॥
३२३ न, केशनखादिष्वनुपलब्धेः ॥ ६ ॥
३२४ त्वक्पर्यन्तत्वाच्छरीरस्य केशनखादिष्वप्रसङ्गः ॥ ७ ॥
३२५ शरीरगुणवैधर्म्यात् ॥ ८ ॥
३२६ न रूपादीनामितरेतरवैधर्म्यात् ॥ ९ ॥
३२७ ऐन्द्रियकत्वाद्रूपादीनामप्रतिषेधः ॥ १० ॥

अथ चतुर्भिः ४ सूत्रैर्मनःपरीक्षाप्रकरणम् ॥ ६ ॥ (३९)

३२८ ज्ञानायौगपद्यादेकं मनः ॥ १ ॥
३२९ न, युगपदनेकक्रियोपलब्धेः ॥ २ ॥
३३० अलातचक्रदर्शनवत् तदुपलब्धिराशुसञ्चारात् ॥ ३ ॥
३३१ यथोक्तहेतुत्वाच्चाणु ॥ ४ ॥

अथ त्रयोदशभिः १३ सूत्रैः शरीरस्यादृष्टनिष्पाद्यत्वप्रकरणम् ॥ ७ ॥ (४०)

३३२ पूर्वकृतफलानुबन्धात् तदुत्पत्तिः ॥ १ ॥
३३३ भूतेभ्यो मूर्त्त्युपादानवत् तदुपादानम् ॥ २ ॥
३३४ न, साध्यसमत्वात् ॥ ३ ॥
३३५ नोत्पत्तिनिमित्तत्वान्मातापित्रोः ॥ ४ ॥
३३६ तथाऽऽहारस्य ॥ ५ ॥
३३७ प्राप्तौ चानियमात् ॥ ६ ॥
३३८ शरीरोत्पत्तिनिमित्तवत् संयोगोत्पत्तिनिमित्तं कर्म ॥ ७ ॥
३३९ एतेनानियमः प्रत्युक्तः ॥ ८ ॥
३४० तददृष्टकारितमिति चेत् पुनस्तत्प्रसङ्गोऽपवर्गे ॥ ९ ॥
३४१ मनःकर्मनिमित्तत्वाच्च संयोगाद्यनुच्छेदः ॥ १० ॥
३४२ नित्यत्वप्रसङ्गश्च प्रायेणानुपपत्तेः ॥ ११ ॥

३४३ अणुश्यामतानित्यत्ववदेतत् स्यात् ॥ १२ ॥

३४४ नाकृताभ्यागमप्रसङ्गात् ॥ १३ ॥

इति द्विसप्तत्या ७२ सूत्रैः, सप्तभिः ७ प्रकरणै-
स्तृतीयाध्यायस्य द्वितीयमाह्निकम् ॥
समाप्तश्च तृतीयोऽध्यायः ॥
अत्र प्रकरणानि १६, सूत्राणि १४५ ॥

---

## अथ चतुर्थाध्यायस्य प्रथममाह्निकम्

अथ द्वाभ्यां २ सूत्राभ्यां प्रवृत्तिदोषसामान्यपरीक्षाप्रकरणम् ॥ १ ॥ (४१)

३४५ प्रवृत्तिर्यथोक्ता ॥ १ ॥

३४६ तथा दोषाः ॥ २ ॥

अथ सप्तभिः ७ सूत्रैर्दोषत्रैराश्यप्रकरणम् ॥ २ ॥ (४२)

३४७ तत्त्रैराश्यं रागद्वेषमोहान्तरभावात् ॥ १ ॥

३४८ नैकप्रत्यनीकभावात् ॥ २ ॥

३४९ व्यभिचारादहेतुः ॥ ३ ॥

३५० तेषां मोहः पापीयान् नामूढस्येतरोत्पत्तेः ॥ ४ ॥

३५१ निमित्तनैमित्तिकभावादर्थान्तरभावो दोषेभ्यः ॥ ५ ॥

३५२ न, दोषलक्षणावरोधान्मोहस्य ॥ ६ ॥

३५३ निमित्तनैमित्तिकोपपत्तेश्च तुल्यजातीयानामप्रतिषेधः ॥ ७ ॥

अथ चतुर्भिः ४ सूत्रैः प्रेत्यभावपरीक्षाप्रकरणम् ॥ ३ ॥ (४३)

३५४ आत्मनित्यत्वे प्रेत्यभावसिद्धिः ॥ १ ॥

३५५ व्यक्ताद्व्यक्तानां प्रत्यक्षप्रामाण्यात् ॥ २ ॥

३५६ न, घटाद्घटानिष्पत्तेः ॥ ३ ॥

३५७ व्यक्ताद्घटनिष्पत्तेरप्रतिषेधः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चभिः ५ सूत्रैः शून्यतोपादानप्रकरणम् ॥ ४ ॥ (४४)

३५८ अभावाद्भावोत्पत्तिर्नानुपमृद्य प्रादुर्भावात् ॥ १ ॥

३५९ व्याघातादप्रयोगः ॥ २ ॥

३६० नातीतानागतयोः कारकशब्दप्रयोगात् ॥ ३ ॥

३६१ न विनष्टेभ्योऽनिष्पत्तेः ॥ ४ ॥

३६२ क्रमनिर्देशादप्रतिषेधः ॥ ५ ॥

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैरीश्वरोपादानताप्रकरणम् ॥ ५ ॥ (४५)

३६३ ईश्वरः कारणं पुरुषकर्माफल्यदर्शनात् ॥ १ ॥

३६४ न, पुरुषकर्माभावे फलानिष्पत्तेः ॥ २ ॥

३६५ तत्कारितत्वादहेतुः ॥ ३ ॥

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैराकस्मिकत्वप्रकरणम् ॥ ६ ॥ (४६)

३६६ अनिमित्ततो भावोत्पत्तिः कण्टकतैक्ष्ण्यादिदर्शनात् ॥ १ ॥

३६७ अनिमित्तनिमित्तत्वान्नानिमित्ततः ॥ २ ॥

३६८ निमित्तानिमित्तयोरर्थान्तरभावादप्रतिषेधः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्भिः ४ सूत्रैः सर्वानित्यत्वनिराकरणम् ॥ ७ ॥ (४७)

३६९ सर्वमनित्यमुत्पत्तिविनाशधर्मकत्वात् ॥ १ ॥

३७० नानित्यतानित्यत्वात् ॥ २ ॥

३७१ तदनित्यत्वमग्नेर्दाह्यं विनाश्यानुविनाशवत् ॥ ३ ॥

३७२ नित्यस्याप्रत्याख्यानं यथोपलब्धिव्यवस्थानात् ॥ ४ ॥

अथ पञ्चभिः ५ सूत्रैः सर्वनित्यत्वनिराकरणप्रकरणम् ॥ ८ ॥ (४८)

३७३ सर्वं नित्यं पञ्चभूतनित्यत्वात् ॥ १ ॥

३७४ नोत्पत्तिविनाशकारणोपलब्धेः ॥ २ ॥

३७५ तल्लक्षणावरोधादप्रतिषेधः ॥ ३ ॥

३७६ नोत्पत्तितत्कारणोपलब्धेः ॥ ४ ॥

३७७ न व्यवस्थानुपपत्तेः ॥ ५ ॥

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैः सर्वपृथक्त्वनिराकरणप्रकरणम् ॥ ९ ॥ (४९)

३७८ सर्वं पृथग् भावलक्षणपृथक्त्वात् ॥ १ ॥

३७९ नानेकलक्षणैरेकभावनिष्पत्तेः ॥ २ ॥

३८० लक्षणव्यवस्थानादेवाप्रतिषेधः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्भिः ४ सूत्रैः सर्वशून्यतानिराकरणप्रकरणम् ॥ १० ॥ (५०)

३८१ सर्वमभावो भावेष्वितरेतराभावसिद्धेः ॥ १ ॥

३८२ न, स्वभावसिद्धेर्भावानाम् ॥ २ ॥

३८३ न स्वभावसिद्धिरापेक्षिकत्वात् ॥ ३ ॥

३८४ व्याहतत्वादयुक्तम् ॥ ४ ॥

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैः संख्यैकान्तवादनिराकरणप्रकरणम् ॥११॥ (५१)

३८५ सङ्ख्यैकान्तासिद्धिः कारणानुपपत्त्युपपत्तिभ्याम् ॥ १ ॥

३८६ न कारणावयवभावात् ॥ २ ॥

३८७ निरवयवत्वादहेतुः ॥ ३ ॥

अथ एकादशभिः ११ सूत्रैः फलपरीक्षाप्रकरणम् ॥ १२ ॥ (५२)

३८८ सद्यः कालान्तरे च फलनिष्पत्तेः संशयः ॥ १ ॥

३८९ न सद्यः कालान्तरोपभोग्यत्वात् ॥ २ ॥

३९० कालान्तरेणानिष्पत्तिर्हेतुविनाशात् ॥ ३ ॥

३९१ प्राङ्निष्पत्तेर्वृक्षफलवत् तत् स्यात् ॥ ४ ॥

३९२ नासन्न सन्न सदसत् सदसतोर्वैधर्म्यात् ॥ ५ ॥

३९३ उत्पादव्ययदर्शनात् ॥ ६ ॥

३९४ बुद्धिसिद्धं तु तदसत् ॥ ७ ॥

३९५ आश्रयव्यतिरेकाद्वृक्षफलोत्पत्तिवदित्यहेतुः ॥ ८ ॥

३९६ प्रीतेरात्माश्रयत्वादप्रतिषेधः ॥ ९ ॥
३९७ न पुत्रस्त्रीपशुपरिच्छदहिरण्यान्नादिफलनिर्देशात् ॥ १० ॥
३९८ तत्सम्बन्धात् फलनिष्पत्तेस्तेषु फलवदुपचारः ॥ ११ ॥

अथ चतुर्भिः ४ सूत्रैर्दुःखपरीक्षाप्रकरणम् ॥ १३ ॥ (५३)

३९९ विविधबाधनायोगात् दुःखमेव जन्मोत्पत्तिः ॥ १ ॥
४०० न, सुखस्याप्यन्तरालनिष्पत्तेः ॥ २ ॥
४०१ बाधनाऽनिवृत्तेर्वेदयतः पर्येषणदोषादप्रतिषेधः ॥ ३ ॥
४०२ दुःखविकल्पे सुखाभिमानाच्च ॥ ४ ॥

अथ दशभिः १० सूत्रैरपवर्गपरीक्षाप्रकरणम् ॥ १४ ॥ (५४)

४०३ ऋणक्लेशप्रवृत्त्यनुबन्धादपवर्गाभावः ॥ १ ॥
४०४ प्रधानशब्दानुपपत्तेर्गुणशब्देनानुवादो निन्दाप्रशंसोपपत्तेः ॥२॥
४०५ समारोपणादात्मन्यप्रतिषेधः ॥ ३ ॥
४०६ पात्रचयान्तानुपपत्तेश्च फलाभावः ॥ ४ ॥
४०७ सुषुप्तस्य स्वप्नादर्शने क्लेशाभावादपवर्गः ॥ ५ ॥
४०८ न प्रवृत्तिः प्रतिसन्धानाय हीनक्लेशस्य ॥ ६ ॥
४०९ न क्लेशसन्ततेः स्वाभाविकत्वात् ॥ ७ ॥
४१० प्रागुत्पत्तेरभावानित्यत्ववत् स्वाभाविकेऽप्यनित्यत्वम् ॥ ८ ॥
४११ अणुश्यामतानित्यत्ववद्वा ॥ ९ ॥
४१२ न, संकल्पनिमित्तत्वाच्च रागादीनाम् ॥ १० ॥

इति अष्टषष्टया ६८ सूत्रैः, चतुर्दशभिः १४ प्रकरणै-
श्चतुर्थाध्यायस्याद्यमाह्निकम् ॥

---

## अथ चतुर्थाध्यायस्य द्वितीयमाह्निकम्

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैस्तत्त्वज्ञानोत्पत्तिप्रकरणम् ॥ १ ॥ (५५)

४१३ दोषनिमित्तानां तत्त्वज्ञानादहङ्कारनिवृत्तिः ॥ १ ॥

४१४ दोषनिमित्तं रूपादयो विषयाः संकल्पकृताः ॥ २ ॥

४१५ तन्निमित्तं त्ववयव्याभमानः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्दशभिः १४ सूत्रैः प्रासङ्गिकमवयवावयविप्रकरणम् ॥२॥ (५६)

४१६ विद्याऽविद्याद्वैविध्यात् संशयः ॥ १ ॥

४१७ तदसंशयः पूर्वहेतुप्रसिद्धत्वात् ॥ २ ॥

४१८ वृत्त्यनुपपत्तेरपि तर्हि न संशयः ॥ ३ ॥

४१९ कृत्स्नैकदेशावृत्तित्वादवयवानामवयव्यभावः ॥ ४ ॥

४२० तेषु चावृत्तेरवयव्यभावः ॥ ५ ॥

४२१ पृथक् चावयवेभ्योऽवृत्तेः ॥ ६ ॥

४२२ न चावयव्यवयवाः ॥ ७ ॥

४२३ एकस्मिन् भेदाभावादभेदशब्दप्रयोगानुपपत्तेरप्रश्नः ॥ ८ ॥

४२४ अवयवान्तरभावेऽप्यवृत्तेरहेतुः ॥ ९ ॥

४२५ केशसमूहे तैमिरिकोपलब्धिवत् तदुपलब्धिः ॥ १० ॥

४२६ स्वविषयानतिक्रमेणेन्द्रियस्य पटुमन्दभावाद्विषयग्रहणस्य तथाभावो नाविषये प्रवृत्तिः ॥ ११ ॥

४२७ अवयवावयविप्रसङ्गश्चैवमाप्रलयात् ॥ १२ ॥

४२८ न प्रलयोऽणुसद्भावात् ॥ १३ ॥

४२९ परं वा त्रुटेः ॥ १४ ॥

अथाष्टभिः ८ सूत्रैरौपोद्घातिकं निरवयवत्वप्रकरणम् ॥ ३ ॥ (५७)

४३० आकाशव्यतिभेदात् तदनुपपत्तिः ॥ १ ॥

४३१ आकाशासर्वगतत्वं वा ॥ २ ॥

४३२ अन्तर्बहिश्च कार्यद्रव्यस्य कारणान्तरवचनादकार्ये तदभावः ॥३॥
४३३ शब्दसंयोगविभवाच्च सर्वगतम् ॥ ४ ॥
४३४ अव्यूहाविष्टम्भविभुत्वानि चाकाशधर्माः ॥ ५ ॥
४३५ मूर्तिमतां च संस्थानोपपत्तेरवयवसद्भावः ॥ ६ ॥
४३६ संयोगोपपत्तेश्च ॥ ७ ॥
४३७ अनवस्थाकारित्वादनवस्थानुपपत्तेश्चाप्रतिषेधः ॥ ८ ॥

अथ द्वादशभिः १२ सूत्रैः प्रासङ्गिकं बाह्यार्थभङ्गनिराकरण प्रकरणम् ॥ ४ ॥ (५८)

४३८ बुद्ध्या विवेचनात्तु भावानां याथात्म्यानुपलब्धिस्तन्त्वपकर्षणे पटसद्भावानुपलब्धिवत् तदनुपलब्धिः ॥ १ ॥
४३९ व्याहतत्वादहेतुः ॥ २ ॥
४४० तदाश्रयत्वादपृथग्ग्रहणम् ॥ ३ ॥
४४१ प्रमाणतश्चार्थप्रतिपत्तेः ॥ ४ ॥
४४२ प्रमाणानुपपत्त्युपपत्तिभ्याम् ॥ ५ ॥
४४३ स्वप्नविषयाभिमानवदयं प्रमाणप्रमेयाभिमानः ॥ ६ ॥
४४४ मायागन्धर्वनगरमृगतृष्णिकावद्वा ॥ ७ ॥
४४५ हेत्वभावादसिद्धिः ॥ ८ ॥
४४६ स्मृतिसंकल्पवच्च स्वप्नविषयाभिमानः ॥ ९ ॥
४४७ मिथ्योपलब्धेर्विनाशस्तत्त्वज्ञानात् स्वप्नविषयाभिमानप्रणाशवत् प्रतिबोधे ॥ १० ॥
४४८ बुद्धेश्चैवं निमित्तसद्भावोपलम्भात् ॥ ११ ॥
४४९ तत्त्वप्रधानभेदाच्च मिथ्याबुद्धेर्द्वैविध्योपपत्तिः ॥ १२ ॥

अथ द्वादशभिः १२ सूत्रैस्तत्त्वज्ञानविवृद्धिप्रकरणम् ॥ ५ ॥ (५९)

४५० समाधिविशेषाभ्यासात् ॥ १ ॥
४५१ न, अर्थविशेषप्राबल्यात् ॥ २ ॥

४५२ क्षुदादिभिः प्रवर्त्तनाच्च ॥ ३ ॥
४५३ पूर्वकृतफलानुबन्धान् तदुत्पत्तिः ॥ ४ ॥
४५४ अरण्यगुहापुलिनादिषु योगाभ्यासोपदेशः ॥ ५ ॥
४५५ अपवर्गेऽप्येवं प्रसङ्गः ॥ ६ ॥
४५६ न, निष्पन्नावश्यम्भावित्वात् ॥ ७ ॥
४५७ तदभावश्चापवर्गे ॥ ८ ॥
४५८ तदर्थं यमनियमाभ्यामात्म संस्कारो योगाच्चाध्यात्मविध्युपायैः ॥९॥
४५९ ज्ञानग्रहणाभ्यासस्तद्विद्यैश्च सह संवादः ॥ १० ॥
४६० तं शिष्यगुरुसब्रह्मचारिविशिष्टश्रेयोऽर्थिभिरनसूयुभिरभ्युपेयात् ॥
४६१ प्रतिपक्षहीनमपि वा प्रयोजनार्थमर्थित्वे ॥ १२ ॥

अथ द्वाभ्यां २ सूत्राभ्यां तत्त्वज्ञानपरिपालनप्रकरणम् ॥ ६ ॥ (६०)

४६२ तत्त्वाध्यवसायसंरक्षणार्थं जल्पवितण्डे बीजप्ररोहसंरक्षणार्थं कण्टकशाखावरणवत् ॥ १ ॥
४६३ ताभ्यां विगृह्य कथनम् ॥ २ ॥

इति एकपञ्चाशता ५१ सूत्रैः, षड्भिः ६ प्रकरणैश्चतुर्थाध्यायस्य द्वितीयमाह्निकं समाप्तम् ॥

समाप्तश्चायं चतुर्थोऽध्यायः ॥

अत्र प्रकरणानि २०, सूत्राणि ११९ ॥

---

## अथ पञ्चमोऽध्यायस्य प्रथममाह्निकम्।

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैः सत्प्रतिपक्षदेशनाभासप्रकरणम् ॥ १ ॥ (६१)

४६४ साधर्म्यवैधर्म्योत्कर्षापकर्षवर्ण्यावर्ण्यविकल्पसाध्यप्राप्त्यप्राप्तिप्रसङ्गप्रतिदृष्टान्तानुत्पत्तिसंशयप्रकरणहेत्वर्थापत्त्यविशेषोपपत्त्युपलब्ध्यनुपलब्धिनित्यानित्यकार्यसमाः ॥ १ ॥

४६५ साधर्म्यवैधर्म्याभ्यामुपसंहारे तद्धर्मविपर्ययोपपत्तेः साधर्म्यवैधर्म्य-
समौ ॥ २ ॥

४६६ गोत्वाद्गोसिद्धिवत् तत्सिद्धिः ॥ ३ ॥

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैःसाध्यदृष्टान्तधर्मविकल्पप्रभावोत्कर्षसमादि
जातिषट्कप्रकरणम् ॥ २ ॥ (६२)

४६७ साध्यदृष्टान्तयोर्धर्मविकल्पादुभयसाध्यत्वाच्चोत्कर्षापकर्षवर्ण्यावर्ण्य-
विकल्पसाध्यसमाः ॥ १ ॥

४६८ किञ्चित्साधर्म्यादुपसंहारसिद्धेर्वैधर्म्यादप्रतिषेधः ॥ २ ॥

४६९ साध्यातिदेशाच्च दृष्टान्तोपपत्तेः ॥ ३ ॥

अथ द्वाभ्यां २ सूत्राभ्यां प्राप्त्यप्राप्तियुगनद्धवाहिविकल्पोपक्रम-
जातिद्वयप्रकरणम् ॥ ३ ॥ (६३)

४७० प्राप्य साध्यमप्राप्य वा हेतोः प्राप्त्याऽविशिष्टत्वादप्राप्त्याऽसाध-
कत्वाच्च प्राप्त्यप्राप्तिसमौ ॥ १ ॥

४७१ घटादिनिष्पत्तिदर्शनात् पीडने चाभिभिचारादप्रतिषेधः ॥ २ ॥

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैर्युगनद्धवाहिप्रसङ्गप्रतिदृष्टान्तसमजातिद्वयप्रकरणम्॥४॥(६४)

४७२ दृष्टान्तस्य कारणानपदेशात् प्रत्यवस्थानाच्च प्रतिदृष्टान्तेन प्रसङ्ग-
प्रतिदृष्टान्तसमौ ॥ १ ॥

४७३ प्रदीपोपादानप्रसङ्गविनिवृत्तिवत् तद्विनिवृत्तिः ॥ २ ॥

४७४ प्रतिदृष्टान्तहेतुत्वे च नाहेतुर्दृष्टान्तः ॥ ३ ॥

अथ द्वाभ्यां २ सूत्राभ्यामनुत्पत्तिसमप्रकरणम् ॥ ५ ॥ (६५)

४७५ प्रागुत्पत्तेः कारणाभावादनुत्पत्तिसमः ॥ १ ॥

४७६ तथाभावादुत्पन्नस्य कारणोपपत्तेर्न कारणप्रतिषेधः ॥ २ ॥

अथ द्वाभ्यां २ सूत्राभ्यां संशयसमप्रकरणम् ॥ ६ ॥ (६६)

४७७ सामान्यदृष्टान्तयोरैन्द्रियकत्वे समाने नित्यानित्यसाधर्म्यात्
संशयसमः ॥ १ ॥

४७८ साधर्म्यात् संशये न संशयो वैधर्म्यादुभयथा वा संशयेऽत्यन्तसंशयः प्रसङ्गो नित्यत्वानभ्युपगमाच्च सामान्यस्याप्रतिषेधः ॥२॥

अथ द्वाभ्यां २ सूत्राभ्यां प्रकरणसमप्रकरणम् ॥ ७ ॥　( ६७ )

४७९ उभयसाधर्म्यात् प्रक्रियासिद्धेः प्रकरणसमः ॥ १ ॥

४८० प्रतिपक्षात् प्रकरणासिद्धेः प्रतिषेधानुपपत्तिः प्रतिपक्षोपपत्तेः॥२॥

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैरहेतुसमप्रकरणम् ॥ ८ ॥　( ६८ )

४८१ त्रैकाल्यानुपपत्तेर्हेतोरहेतुसमः ॥ १ ॥

४८२ न हेतुतः साध्यसिद्धेस्त्रैकाल्यासिद्धिः ॥ २ ॥

४८३ प्रतिषेधानुपपत्तेश्च प्रतिषेद्धव्याप्रतिषेधः ॥ ३ ॥

अथ द्वाभ्यां २ सूत्राभ्यामर्थापत्तिसमप्रकरणम् ॥ ९ ॥　( ६९ )

४८४ अर्थापत्तितः प्रतिपक्षसिद्धेरर्थापत्तिसमः ॥ १ ॥

४८५ अनुक्तस्यार्थापत्तेः पक्षहानेरुपपत्तिरनुक्तत्वादनैकान्तिकत्वाच्चार्थापत्तेः ॥ २ ॥

अथ द्वाभ्यां २ सूत्राभ्यामविशेषसमप्रकरणम् ॥ १० ॥　( ७० )

४८६ एकधर्मोपपत्तेरविशेषे सर्वाविशेषप्रसङ्गात् सद्भावोपपत्तेरविशेषसमः ॥ १ ॥

४८७ क्वचित् तद्धर्मोपपत्तेः क्वचिच्चानुपपत्तेः प्रतिषेधाभावः ॥ २ ॥

अथ द्वाभ्यां २ सूत्राभ्यामुपपत्तिसमप्रकरणम् ॥ ११ ॥　( ७१ )

४८८ उभयकारणोपपत्तेरुपपत्तिसमः ॥ १ ॥

४८९ उपपत्तिकारणाभ्यनुज्ञानादप्रतिषेधः ॥ २ ॥

अथ द्वाभ्यां २ सूत्राभ्यामुपलब्धिसमप्रकरणम् ॥ १२ ॥　( ७२ )

४९० निर्दिष्टकारणाभावेऽप्युपलम्भादुपलब्धिसमः ॥ १ ॥

४९१ कारणान्तरादपि तद्धर्मोपपत्तेरप्रतिषेधः ॥ २ ॥

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैरनुपलब्धिसमप्रकरणम् ॥ १३ ॥ (७३)

४९२ तदनुपलब्धेरनुपलम्भादभावसिद्धौ तद्विपरीतोपपत्तेरनुपलब्धिसमः ॥ १ ॥

४९३ अनुपलम्भात्मकत्वादनुपलब्धेरहेतुः ॥ २ ॥

४९४ ज्ञानविकल्पानां च भावाभावसंवेदनादध्यात्मम् ॥ ३ ॥

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैरनित्यसमप्रकरणम् ॥ १४ ॥ (७४)

४९५ साधर्म्यात् तुल्यधर्मोपपत्तेः सर्वानित्यत्वप्रसङ्गादनित्यसमः ॥१॥

४९६ साधर्म्यादसिद्धेः प्रतिषेधासिद्धिः प्रतिषेध्यसाधर्म्याच्च ॥ २ ॥

४९७ दृष्टान्ते च साध्यसाधनभावेन प्रज्ञातस्य धर्मस्य हेतुत्वात् तस्य चोभयथाभावान्नाविशेषः ॥ ३ ॥

अथ द्वाभ्यां २ सूत्राभ्यां नित्यसमप्रकरणम् ॥ १५ ॥ (७५)

४९८ नित्यमनित्यभावादनित्ये नित्यत्वोपपत्तेर्नित्यसमः ॥ १ ॥

४९९ प्रतिषेध्ये नित्यमनित्यभावादनित्ये नित्यत्वोपपत्तेः प्रतिषेधाभावः ॥ २ ॥

अथ द्वाभ्यां २ सूत्राभ्यां कार्यसमप्रकरणम् ॥ १६ ॥ (७६)

५०० प्रयत्नकार्यानेकत्वात् कार्यसमः ॥ १ ॥

५०१ कार्यान्यत्वे प्रयत्नाहेतुत्वमनुपलब्धिकारणोपपत्तेः ॥ २ ॥

अथ पञ्चभिः ५ सूत्रैः षट्पक्षीरूपकथाभासप्रकरणम् ॥ १७ ॥ (७७)

५०२ प्रतिषेधेऽपि समानो दोषः ॥ १ ॥

५०३ सर्वत्रैवम् ॥ २ ॥

५०४ प्रतिषेधविप्रतिषेधे प्रतिषेधदोषवद्दोषः ॥ ३ ॥

५०५ प्रतिषेधं सदोषमभ्युपेत्य प्रतिषेधविप्रतिषेधे समानो दोषप्रसङ्गो मतानुज्ञा ॥ ४ ॥

५०६ स्वपक्षलक्षणापेक्षोपपत्त्युपसंहारे हेतुनिर्देशे परपक्षदोषाभ्युपगमात् समानो दोषः ॥ ५ ॥

इति त्रिचत्वारिंशता ४३ सूत्रैः, सप्तदशभिः १७
प्रकरणैः पञ्चमाध्यायस्याद्यमाह्निकं समाप्तम् ।

---

## अथ पञ्चमाध्यायस्य द्वितीयमाह्निकम् ।

अथ षड्भिः ६ सूत्रैः प्रतिज्ञाहेत्वन्यतराश्रितनिग्रहस्थानपञ्चक-
विशेषलक्षणप्रकरणम् ॥ १ ॥ (७८)

५०७ प्रतिज्ञाहानिः प्रतिज्ञान्तरं प्रतिज्ञाविरोधः प्रतिज्ञासन्न्यासो हेत्वन्तरमर्थान्तरं निरर्थकमविज्ञातार्थमपार्थकमप्राप्तकालं न्यूनमधिकं पुनरुक्तमननुभाषणमज्ञानमप्रतिभा विक्षेपो मतानुज्ञा पर्यनुयोज्योपेक्षणं निरनुयोज्यानुयोगोऽपसिद्धान्तो हेत्वाभासाश्च निग्रहस्थानानि ॥ १ ॥

५०८ प्रतिदृष्टान्तधर्माभ्यनुज्ञा स्वदृष्टान्ते प्रतिज्ञाहानिः ॥ २ ॥

५०९ प्रतिज्ञातार्थप्रतिषेधे धर्मविकल्पात् तदर्थनिर्देशः प्रतिज्ञान्तरम् ॥

५१० प्रतिज्ञाहेत्वोर्विरोधः प्रतिज्ञाविरोधः ॥ ४ ॥

५११ पक्षप्रतिषेधे प्रतिज्ञातार्थापनयनं प्रतिज्ञासन्न्यासः ॥ ५ ॥

५१२ अविशेषोक्ते हेतौ प्रतिषिद्धे विशेषमिच्छतो हेत्वन्तरम् ॥ ६ ॥

अथ चतुर्भिः ४ सूत्रैः प्रकृतोपयोगिवाक्यार्थप्रतिपत्तिफलशून्य-
निग्रहस्थानचतुष्कप्रकरणम् ॥ २ ॥ (७९)

५१३ प्रकृतादर्थादप्रतिसम्बन्धार्थमर्थान्तरम् ॥ १ ॥

५१४ वर्णक्रमनिर्देशवन्निरर्थकम् ॥ २ ॥

५१५ परिषत्प्रतिवादिभ्यां त्रिरभिहितमप्यविज्ञातमविज्ञातार्थम् ॥ ३ ॥

५१६ पौर्वापर्यायोगादप्रतिसम्बद्धार्थमपार्थकम् ॥ ४ ॥

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैः स्वसिद्धान्तानुरूपप्रयोगाभासनिग्रह-
स्थानत्रिकप्रकरणम् ॥ ३ ॥ (८०)

५१७ अवयवविपर्यासवचनमप्राप्तकालम् ॥ १ ॥

५१८ हीनमन्यतमेनाप्यवयवेन न्यूनम् ॥ २ ॥

५१९ हेतूदाहरणाधिकमधिकम् ॥ ३ ॥

अथ द्वाभ्यां २ सूत्राभ्यां पुनरुक्तनिग्रहस्थानप्रकरणम् ॥ ४ ॥ (८१)

५२० शब्दार्थयोः पुनर्वचनं पुनरुक्तमन्यत्रानुवादात् ॥ १ ॥

५२१ अर्थादापन्नस्य स्वशब्देन पुनर्वचनं पुनरुक्तम् ॥ २ ॥

अथ चतुर्भिः ४ सूत्रैरुत्तरविरोधिनिग्रहस्थानचतुष्कप्रकरणम् ॥५॥ (८२)

५२२ विज्ञातस्य परिषदा त्रिरभिहितस्याप्यप्रत्युच्चारणमननुभाषणम् ॥

५२३ अविज्ञातं चाज्ञानम् ॥ २ ॥

५२४ उत्तरस्याप्रतिपत्तिरप्रतिभा ॥ ३ ॥

५२५ कार्यव्यासङ्गात् कथाविच्छेदो विक्षेपः ॥ ४ ॥

अथ त्रिभिः ३ सूत्रैर्दोषनिरूप्यमतानुज्ञादिनिग्रहस्थानत्रिक-
प्रकरणम् ॥ ६ ॥ (८३)

५२६ स्वपक्षे दोषाभ्युपगमात् परपक्षे दोषप्रसङ्गो मतानुज्ञा ॥ १ ॥

५२७ निग्रहस्थानप्राप्तस्यानिग्रहः पर्यनुयोज्योपेक्षणम् ॥ २ ॥

५२८ अनिग्रहस्थाने निग्रहस्थानाभियोगो निरनुयोज्यानुयोगः ॥ ३ ॥

अथ द्वाभ्यां २ सूत्राभ्यां कथकान्योक्तिनिरूप्यनिग्रह-
स्थानद्वयप्रकरणम् ॥ ७ ॥ (८४)

५२९ सिद्धान्तमभ्युपेत्यानियमात् कथाप्रसङ्गोऽपसिद्धान्तः ॥ १ ॥

५३० हेत्वाभासाश्च यथोक्ताः ॥ २ ॥

**इति चतुर्विंशत्या २४ सूत्रैः, सप्तभिः ७ प्रकरणैः पञ्चमाध्यायस्य द्वितीयमाह्निकं समाप्तम् । समाप्तश्च पञ्चमोऽध्यायः ॥**

अत्र प्रकरणानि २४ सूत्राणि ६७ ॥

अस्मिन् न्यायशास्त्रेऽध्यायाः५, आह्निकानि१०, प्रकरणानि८४, सूत्राणि५३०.

इति प्रकरणसहितः न्यायसूत्रपाठः । शुभमस्तु ॥

*Printed by* :—S. R. Sardesai, B.A., LL.B., Navin Samarth Vidyalaya's 'Samarth Bharat Press', 41 Budhwar Peth, Poona 2.

*Published by* :—Dr. N. G. Sardesai, L.M. & S., for the Oriental Book Agency, 15 Shukrawar, Poona 2.